बैंगन

बैंगन की उत्पत्ति स्थान भारत ही है, अतः इसकी खेती प्राचीन समय से ही यहाँ की जाती है। इसकी खेती देश के सभी भागों में की जाती है।

भूमिः– जैविक पदार्थों से भरपूर दोमट या बलुई दोमट मिट्टी बैंगन की खेती के लिए उपयुक्त होती है।

उन्नत किस्मेंः– पूसा पर्पल लांग, पूसा पर्पल राउण्ड, पूसा पर्पल कलस्टर, पूसा क्रांति, पूसा अनमोल, अर्का नवनीत, स्वर्ण श्री, स्वर्ण मणि, स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, नरेन्द्र हायब्रीड-2, अर्कानिधि स्वर्ण अजय, पूसा हाइब्रिड-9, राजेन्द्र बैंगन-2, पंत सम्राट, आजाद क्रांति, काशी संदेश, पंत ऋतुराज, स्वर्ण शोभा, स्वर्ण शक्ति इत्यादि।

बीज दरः–

अधिक उपजशील प्रजातियाँः (200–280 ग्राम प्रति एकड़)

संकर प्रजातियाँ : 80 ग्राम प्रति एकड़।

पौधशाला में बीज गिराने का समय :– 1. सितम्बर से जनवरी तक फल लेने के लिए बीज पौधशाला में मध्य जून में बीज बोकर तीन सप्ताह के बाद रोपना चाहिए।

2. मार्च से मई तक फल प्राप्त करने के लिए बीज पौधशाला में नवम्बर में बो कर अंत दिसम्बर या जनवरी के प्रारंभ में रोपना चाहिए।

3. जून से अगस्त तक फल प्राप्त करने के लिए बीज पौधशाला में अप्रैल माह में बोकर तीन सप्ताह बाद रोपना चाहिए।

लगाने की विधिः– बैंगन लगाने के लिए बीज को पौधशाला में छोटी–छोटी क्यारियों में बोकर बिचड़ा तैयार करते हैं। जब ये बिचड़े 21-25 दिन के हो जाते हैं तो उन्हे तैयार किये गये खेतों में लगाते हैं।

पौधा रोपने की दूरीः कतार से कतार – 60 सें0मी0 से 75 सें0मी0
पौधा से पौधा – 45 से 60 सें0मी0

खाद की मात्रा (प्रति एकड़): गोबर की सड़ी खाद – 80 –100 क्विंटल
यूरिया –100 किलो
सिंगल सुपर फास्फेट – 120 –160 किलो
म्यूरियेट ऑफ पोटाश – 40 किलो

गोबर खाद, सिंगल सुपर फास्फेट, म्यूरियेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा तथा यूरियाड्रेसिंग के रूप में निकाई–गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाते समय देनी चाहिए।

सिंचाईः– आवश्यकतानुसार 10–12 दिनों पर सिंचाई करें।

उपजः– 80–100 क्विंटल प्रति एकड़।

पौध संरक्षण : कीट

1) एपिलैक्राभृंग : इसके व्यस्क एवं नवजात दोनों ही पत्तियों को खरोंचकर खाते हैं और उन्हें जाली जैसा बना देता है।

रोकथाम : कार्बाराइल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

2) फल बेधक/शीर्ष छेदक : इसके पिल्लू फल में या शीर्ष पर पत्ती के जुड़े हुए स्थान पर छेद बनाकर घुस जाते हैं और उसे खाते हैं। पौधे सूखने लगते हैं। प्रभावित फलों की बढ़वार नहीं होती और वे खाने लायक नहीं रहते हैं।

रोकथाम : इसकी रोकथाम हेतु सर्वप्रथम पौधे के प्रभावित भागों को काट कर मिट्टी में दबा देते हैं। फिर थियोडाइकार्ब 75% डब्लू.पी. 1 ग्राम या फ्लूबेन्डियामाइड 480% एस.सी. 0.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

3) लाही : इसके नवजात एवं वयस्क छोटे हरे/भूरे/काले रंग के होते हैं जो पत्तियों की निचली सतह या कोमल टहनियों से चिपककर रस चूसते हैं और विषाणु फैलाते हैं।

रोकथाम : इमिडाक्लोरपिड 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4) लीफ हॉपर : इसके शिशु एवं वयस्क पत्तियों पर चिपककर रस चूसते हैं। अधिकता की अवस्था में पत्तियों पर छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते हैं तथा पत्तियाँ पीली पड़ जाती है ये विषाणु भी फैलाते हैं।

रोकथाम : बुप्रोफेन्जिन 5% का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

5) सफेद मक्खी : ये कीट बहुत ही छोटे होते हैं जो स्पर्श मात्र से उड़ जाते हैं। ये मक्खियाँ विषाणु जनित रोग फैलाती हैं।

रोकथाम : इमिडाक्लोरपिड 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

6) बरूथी : यह कीट पत्तों के नीचे रस चूस कर पत्तों को बदरंग कर देते हैं। ये गुच्छे में पाये जाते हैं।

रोकथाम : स्पिरोमेसीफेन 240 एस.सी. 1 मि.ली./ली. या डाइकोफाल 2 मि.ली./ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

रोग एवं रोकथाम

1) आद्र गलन : पौधशाला में बिचड़ों का मरना, मिट्टी की सतह से कुछ ऊपर तक जलस्किट, सड़न होना।

रोकथाम : बीजोपचार तथा पौधशाला में क्यारियों की वेविस्टीन दवा 2 ग्राम प्रति लीटर घोल में सिंचाई करें।

2) पाउडरी मिल्ड्यु : पत्तियों के ऊपरी सतह पर सफेद मटमैले पाउडरनुमा फफूंद की उपस्थिति।

रोकथाम : सल्फेक्स दवा 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3) बैक्टिरिया मुरझा : पौधे का अचानक मुरझाकर सूख जाना।

रोकथाम : रोग प्रतिरोधी की किस्में - स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण अजय, स्वर्ण मार्क, स्वर्ण प्रतिभा फसल चक्र में अन्य फसलों का समावेश करें।

4) फोमोसिस ब्लाइट : तने तथा पत्तियों पर मटमैले भूरे गोलाकार धब्बे, पत्तियों का पीला पड़ना, फलों पर धब्बे तथा सड़न।

रोकथाम : गरम पानी (52^0 सें.) से बीजोपचार 30 मिनट तक या वेविस्टिन से बीजोपचार तथा वेविस्टिन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से 3 से 4 छिड़काव 15-20 दिन के अंतर पर करें।

———